लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

निर्गुण काव्यधारा

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

* निर्गुण काव्य धारा के दो भेद हैं -
(i) कृष्ण काव्य परंपरा
(ii) राम काव्य परंपरा

* निर्गुण काव्य परंपरा :-
हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में निर्गुण भक्तिकाव्य दो उपमुख्यधाराओं में विभक्त था। ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी।

ज्ञानाश्रयी को कुछ विद्वानों ने संतकाव्य और प्रेमाश्रयी को सूफीकाव्य कहा है। संतकाव्य एक व्यापक काव्य था और कबीर इसके प्रतिनिधि कवि हुए। कबीर के अतिरिक्त रैदास नानकदेव दादुदयाल रूपदास, सुंदरदास, रज्जब और पीपा आदि संत काव्यधारा के अन्य प्रमुख कवि हैं।

संत काव्य का दार्शनिक आधार अत्यंत विस्तृत है। उपनिषद, नाथपंथ इस्लाम धर्म सूफीदर्शन इसमें प्रमुख है। संतों ने उपनिषदों में प्रतिपादित ब्रह्म, जीव, जगत और माया संबंधी विचारधारा को स्वीकार किया है। संतों के ~~समाधान~~ साधनापक्ष, भक्तिपद्धति और प्रणय भावना पर आचार्य शंकर का प्रभाव है। नाथके प्रभाव स्वरूप गुरु की प्रतिष्ठा, शून्यवाद आदि संतकाव्य में आए है। इस्लाम के संपर्क और प्रभाव के कारण संतों की विचारधारा एकेश्वरवाद से प्रभावित हुई है। संत काव्य में दांपत्य प्रतीक तथा प्रेम और उदारता की भावना सूफी प्रभाव के कारण है।

संत कवियों की तरह सूफी कवि भी ईश्वर के निराकार निर्गुण रूप को ही मानते हैं। सूफी काव्य का मूल स्वर प्रेम का है। सूफी कवि प्रेम के माध्यम से लौकिक ईश्वर तक पहुँचना चाहते हैं। इसी कर्म में वे लौकिक प्रेम के विभिन्न पक्षों का मार्मिक वर्णन भी करते हैं। एकेश्वरवाद शैतान की अवधारणा तथा गुरु (पीर) की महत्ता आदि सूफी काव्य के प्रमुख तत्व हैं। मलिक मुहम्मद जायसी सूफी काव्य के प्रतिनिधित्व कवि हैं। इनके अतिरिक्त मुल्लादाउद, उस्मान, कुतुबन आदि अन्य प्रमुख सूफी कवि हैं।

निर्गुण काव्य की इन दोनों धाराओं ने लोक पर बहुत बल दिया है। जहाँ संत कवियों ने इसके लिए खंडन का मार्ग अपनाया वहीं सूफी कवियों ने मंडन का मार्ग अपनाया है। किंतु ये दोनों काव्यधारा एक ऐसे सामान्य धरातल की खोज में थी जहाँ सभी झूठे बंधनों से बाहर आकर मनुष्य परस्पर प्रेम के बंधन में बँध सके। ज्ञानाश्रयी काव्य में कबीर की महानतम काव्यधारा की उपलब्धियाँ कबीर काव्य में अत्यंत सूक्ष्म और आकर्षक रूप में मिलती है। इसके अतिरिक्त उनका भक्त और सामाजिक व्यक्तित्व इतना विराट है, जिसे दूसरे कवि छू भी नहीं पाते।

उत्तरभारत में विकसित होनेवाली निर्गुण परंपरा में मध्यकालीन धर्मसाधना की त्रिवेणी – उपनिषद, योगधारा और आगमधारा का संगम दृष्टिगोचर होता है। इसीकारण

निर्गुण संतों का काव्य हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अपनी सहज करणी व कथनी को जिस सहजता, सरलता और स्वभाविकता से संतों ने अपने काव्यों में प्रस्तुत किया है। उसका कोई जोड़ नहीं है। संत कवियों ने अपनी पूर्ववर्ती साधना पद्धतियों को एकता के सूत्र में पिरोते हुए मानव जीवन के महत्व को समझा और युगीन समाज में प्रचलित कुरीतियों और बाह्य आडंबरों से जनता को सचेत किया। इन कवियों ने अपने समय के पिछड़े अशिक्षित दीन-दशा और अंधकार की गर्त में गिरते जनमानस को उचित दिशा-निर्देश देने का प्रयास किया।

डॉ० रामविलास शर्मा — डॉ० रामविलास शर्मा के शब्दों में "संत साहित्य में मानव मात्र की समानता की भावना एक मूल सूत्र की तरह विद्यमान है। विभिन्न धर्मों और जातियों और वर्णों में बटे निर्धन जनता यह विश्वास प्रकट किए बिना न रह सकी कि सभी मनुष्य भाई-भाई की तरह हैं।

संत साहित्यकी सामाजिक विषय वस्तु का यह ऐतिहासिक महत्व है कि वह जीवन की स्वीकृति का साहित्य है। उसमें जनता का लास और उल्लास है। जनता का क्रोध और आवेश है, एक सुखी समाज की आकांक्षा है उसमें अन्याय के सक्रिय विरोध करने वाले वीरों का चित्र है। इस विषय वस्तु ने दुःख के दिनों में जनता का

मनोबल कायम रखा, जीवन में उनकी आस्था बनी रहने दी।"